गोबिन्द थे छो दयानिधाण झोळी भर द्यो भिच्छुक जाण

गोबिन्द थे छो दयानिधाण,
झोळी भर द्यो भिच्छुक जाण,
राखो घर आयां को माण,
मैं सुणावूं बिणती,
सुणावूं बिणती,
मैं सुणावूं कितणी।bd।

आप बिराजो मन्दर मं,
साम्हां नै चन्दर म्हैल,
राधे जी नै लेर बाग मं,
रोज करो छो सैल,
जैपर सुन्दर राजस्थाण,
थां सम कोई नहीं धनवाण,
राजनपति राजा भगवाण,
मैं सुणावूं बिणती।bd।(१)

बचपन बीत जुवानी बीती,
भोत घणा दु:ख झेल्या,
आप जस्या कै पानै फिर भी,
रात्यूं पापड़ बेल्या,
थां सम कोई नहीं चतर सुजाण,
कद तांइ टूटी रहली छाण,
बंगलो दे द्यो आलिशाण,
मैं सुणावूं बिणती।bd।(२)

बडा लोक सांची क्हैवै छा,
दीपक तळै अंधेरा,
घर का पूत कंवारा डोलै,
पाड़ोसी रा फेरा,
मैं भी पक्की लीन्हीं ठाण,
छोडूं नहीं थां को अस्थाण,
चाये कद भी निखळै प्राण,
मैं सुणावूं बिणती।bd।(३)

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com

थे छो गोबिन्द पिता म्हां का,
श्रीराधा जी माई,
करद्यो बेड़ो पार दास को,
अंईया झांको कांई,
थां की सबसूं ऊंची साण,
साफ करो सारो तुफाण,
मैं भी आयो छूं मेहमाण,
मैं सुणावूं बिणती।bd।(४)

मैं गरजी अरजी कर हारयो,
आप मूंद लिया काण,
मरतां दम तक कहतो रहस्यूं,
बणया रहवो जिजमाण,
आ "गोपाळ" छै अक्कळवाण,
थां की महिमा करी बखाण,
सुणतां रईज्यो म्हां की ताण,
मैं सुणावूं बिणती।bd।(५)

गोबिन्द थे छो दयानिधाण,
झोळी भर द्यो भिच्छुक जाण,
राखो घर आयां को माण,
मैं सुणावूं बिणती,
सुणावूं बिणती,
मैं सुणावूं कितणी।bd।

भजन रचयिता – श्रीगोपाल जी।
स्वर – श्रीमनीष जी शर्मा (जयपुर)
प्रेषक – विवेक अग्रवाल।
9038288815

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com